भगवान बुद्ध के महाश्रावक

खदिरवनिय रेवत

(आरण्यकों में अग्र)

एवं

कङ्खारेवत

(ध्यानियों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

(भगवान बुद्ध के महाश्रावक)

खदिरवनिय रेवत

(आरण्यकों में अग्र)

एवं

कङ्खारेवत

(ध्यानियों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H114 - खदिरवनिय रेवत एवं कङ्खारेवत

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : मार्च 2023

मूल्य: ₹
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-461-4

प्रकाशक:

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला: नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६,
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०,
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:

अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
आरञ्ञकानं यदिदं रेवतो खदिरवनियो।"

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
झायीनं यदिदं कङ्खारेवतो।"

****

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में आरण्यकों में
अग्र हैं खदिरवनिय रेवत।"

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में ध्यानियों में
अग्र हैं कङ्खारेवत।"

– अङ्गुत्तरनिकाय (१. १. २०३-२०४)

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

खदिरवनिय रेवत एवं कङ्खारेवत

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय 7

खदिरवनिय रेवत 9

जन्म और प्रव्रज्या 9

बारात से भाग कर प्रव्रज्या ग्रहण 9

ऋद्धि संपन्न आयुष्मान रेवत 12

रेवत के तप का प्रभाव 14

रेवत सच्चा श्रमण 16

मेरा पुत्र पुण्य-पाप के परे 16

रेवत गृह निर्माणकर्ता नहीं 16

रेवत ने भांजे को प्रव्रजित किया 18

धर्मसेनापति द्वारा रेवत की प्रशंसा 19

दान का पुण्य फल 21

लोक में अनिंदित कोई नहीं 22

सालवन का आत्यंतिक वर्णन 24

चीवर उपभोग के नियम 25

अतीत कथा 28

कङ्खारेवत 31

भगवान पदुमुत्तर का शासन काल 31

भगवान गौतम बुद्ध का शासन काल.....32

बुद्धों की महती अनुकंपा 32

तपस्वी ब्रह्मचर्य-व्रत-पालन करता है.....33

ध्यानियों में अग्र.....34

कङ्खारेवत का दिव्य दान 34

विपश्यना साधना केंद्र 36

प्रकाशकीय

आयुष्मान रेवत धर्मसेनापति सारिपुत्त के सात भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। तीन बड़े बेटों और तीन बेटियों द्वारा प्रव्रज्या ग्रहण कर लेने पर इनकी मां रूपसारि ने इन्हें गृहस्थी में रोके रखने के लिये सात वर्ष की आयु में इनका विवाह कर दिया। बालक रेवत की भी रुचि घर-बार, धन-संपति में नहीं थी। बारात से लौटते समय ये बहाना बनाकर भागे और प्रव्रज्या ले ली। जल विहीन, ऊबड़-खाबड़, झाड़-झंखाड़ वाले खदिर (बबूल) के जंगल में कठोर तपस्या करके ये अर्हत्व को प्राप्त हुए, इसीलिये इनके नाम के आगे "खदिरवनिय" विशेषण जुड़ गया।

इनके निमंत्रण पर भगवान और धर्मसेनापति तीस हजार भिक्षुओं के साथ इनके तप स्थल खदिरवन पहुँचे। वहाँ उस पूरे क्षेत्र को आयुष्मान रेवत ने अपनी ऋद्धि से एक रमणीय विहार में परिवर्तित कर दिया था। उसे देखकर कुछ भिक्षुओं ने कहा कि स्थविर गृहत्याग नहीं गृहनिर्माण में रत हैं। भगवान ने उनके भ्रम को दूर किया। कुछ भिक्षुओं ने वहाँ के झाड़-झंखाड़, कांट-कुश तथा दुर्गमता की चर्चा माता विशाखा से की। भगवान ने उन्हें समझाया कि क्षेत्र और भूमि चाहे जैसे हों अर्हत के तप करने पर वह स्थान रमणीय हो जाता है।

धर्मसेनापति के कहने पर आयुष्मान रेवत ने भांजे को प्रव्रजित किया और उन्हें तपने के लिये कर्मस्थान दिया। भगवान ने उन्हें पुण्य-पाप से परे सच्चा श्रमण बताते हुए आरण्यकों में अग्र स्थान पर प्रतिष्ठित किया।

****

आयुष्मान कङ्खारेवत भगवान गौतम बुद्ध के श्रावक थे। भगवान ने उन्हें ध्यानियों में अग्र स्थान पर प्रतिष्ठित किया था। प्रारंभ में उनका नाम रेवत था। धर्म-विषयों में शंका करने के कारण उन्हें कङ्खारेवत कहा जाने लगा। कालांतर में वे भगवान के उपदेश से शंका मुक्त शांत चित्त हो गये। तब उन्होंने भगवान की प्रज्ञा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। एक बार उन्होंने अपने करुण चित्त से एक प्रेतनी को अभिशाप मुक्त किया। उसको बचाने के लिये वे उसके निमित्त श्रमणों को भोजन-चीवर दान करते थे। वे भिक्षाटन से भोजन प्राप्त करते। पंशुकूल धोकर चीवर बनाते। ये सब प्रेतनी के निमित्त संघ को देते। फलस्वरूप प्रेतनी ने दिव्य संपत्ति प्राप्त की।

विपश्यना विशोधन विन्यास